श्वसन संस्थान रोग निर्देशिका

Diseases of Respiratory System

अशोक कुमार सक्सेना

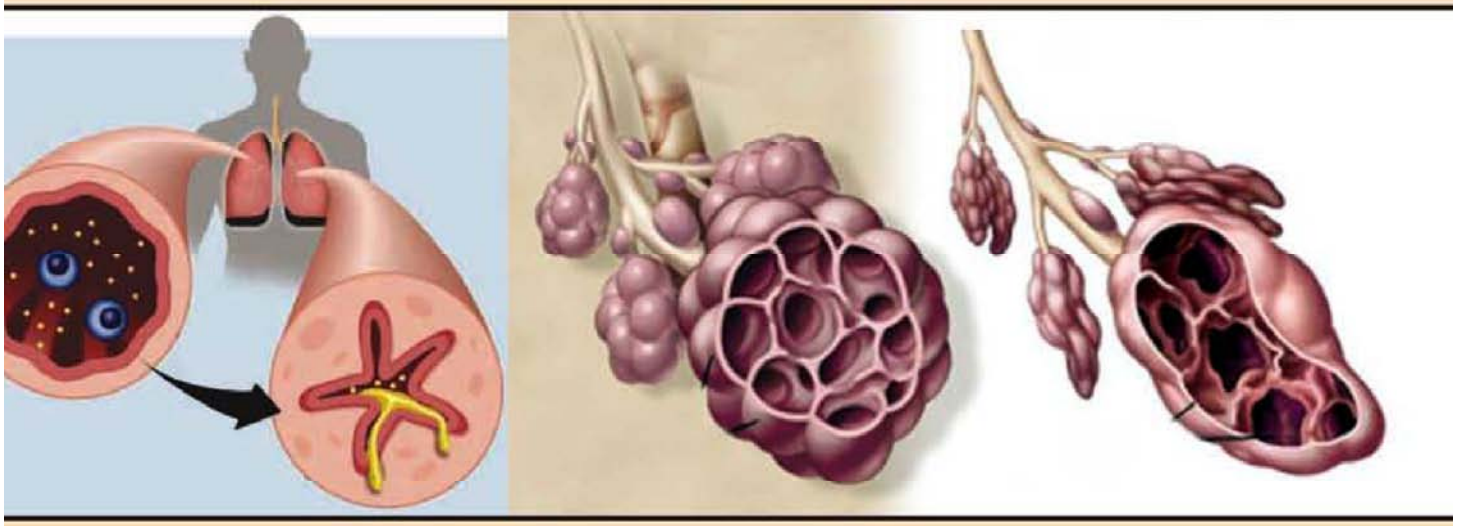

SCIENTIFIC PUBLISHERS

श्वसन संस्थान रोग निर्देशिका

आधुनिक व आयुर्वेदिक सन्दर्भों सहित

(Diseases of Respiratory System)

डॉ॰ अशोक कुमार सक्सेना

B.A.M.S., M.D.(Ay.)
राजकीय आयुर्वेद अस्पताल
बून्दी (राजस्थान)

SCIENTIFIC PUBLISHERS

प्रकाशक

साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया)
5–ए, न्यू पाली रोड़, पो.बॉ. नं. 91
जोधपुर – 342 001
टेलिफोन – 0291 2433323
फैक्स – 0291 2624154
E-mail: info@scientificpub.com

साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया)
4806 / 24, अंसारी रोड़,
दरियागंज
नई दिल्ली – 110 002 (भारत)

© सक्सेना, डॉ. अशोक कुमार, 2015

ISBN: 978-81-7233-935-7
eISBN: 978-93-87741-75-1

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना माइक्रो फिल्म, फोटोस्टेट या अन्य किसी भी प्रकार से प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

लेजर टाईपसेट – राजेश ओझा
भारत में मुद्रित

समर्पण

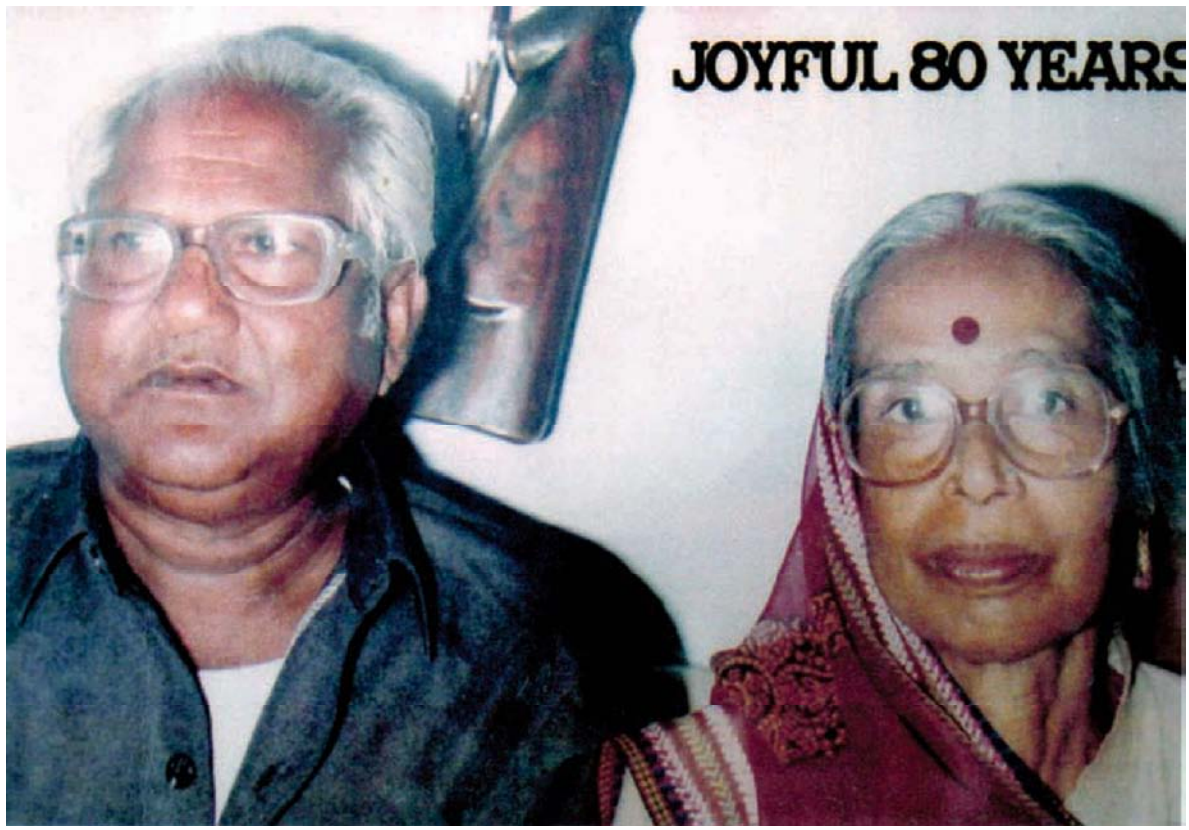

पूज्य पिताश्री रामबाबू सक्सेना

एवं

पूज्यनीया माता श्रीमती प्रकाशवती सक्सेना

के

चरणों में सादर

समर्पित

Prof. Dr. Radhey Shyam Sharma
Vice Chancellor
Office: Nagaur Road, Karwar, Jodhpur - 342 037
Phone : 0291-5153701 (O), 291-2542200 (R)
E-mail: vd.rssharma@gmail.com
rau_jodhpur@yahoo.co.in

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
जोधपुर
Dr. Sarvepalli Radhakrishnan
Rajasthan Ayurved University,
Jodhpur

शुभकामना संदेश

समाज में चिकित्सा कार्य मानव सेवा का बहुत ही महत्त्वपूर्ण उपादान है। चिकित्सक मात्र रोगों को ही चिकित्सा का ही कार्य नहीं करता अपितु चिकित्सा के माध्यम से वह मानव समाज को स्वस्थ कर सृष्टि में उसके कार्य व्यापार को सुचारू रूपेण सम्पादित करने में सहयोग करता है। अतः अरिवत् रोगों से रक्षा करने के कारण मानव समाज के लिए चिकित्सक भगवान के ही समान होता है। किन्तु चिकित्सा कार्य कोई सहज कार्य नहीं है। इस हेतु मात्र शास्त्रानुशीलन ही पर्याप्त नहीं है। इसके साथ साथ सतत चिकित्सा कर्माभ्यास उससे भी ज्यादा आवश्यक है। रोगियों पर सतत दीर्घ चिकित्सा कर्माभ्यास के परिणामस्वरूप अर्जित अनुभवजन्य ज्ञान न केवल स्वयं के आत्मविश्वास की वृद्धि के लिए एवं समाज में यश की प्राप्ति में सहायक होता है अपितु प्राणियों में भी रोगों से ग्रसित होने पर रोगमुक्ति होने की निश्चितता होने से निश्चिंतता का कारण होता है।

डॉ. अशोक सक्सेना प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरान्त निरन्तर समाज में आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से चिकित्सा कार्य में सन्नद्ध हैं। अपने सतत चिकित्सा समभ्यास के परिणामस्वरूप अर्जित दक्षता एवं अनुभव के कारण आज उनकी ख्याति केवल अपने क्षेत्र में ही नहीं है अपितु सुदूर क्षेत्रों से भी रोगी उनके पास रोगमुक्ति हेतु चिकित्सा प्राप्त करने आते हैं। ऐसे प्रबुद्ध शिष्यों को पाकर गुरू भी गौरवान्वित होते हैं। अतएव ऐसा शिष्य पाकर मैं भी गौरव की अनुभूति करता हूँ।

डॉ. सक्सेना ने अपने दीर्घकालीन आयुर्वेद चिकित्सा समभ्यास के माध्यम से प्राप्त अनुभव के आधार पर विभिन्न जटिल रोगों की चिकित्सा कर रोगियों को रोगमुक्त किया है। उन्होंने श्वसन संस्थान से सम्बन्धित रोगों पर विशेष शोधपरक चिकित्सा अनुभवों को अर्जित किया है। उनके मन में ये भावना थी कि उनके द्वारा अर्जित ये ज्ञान केवल उन तक ही न सीमित रहे। इस हेतु उन्होंने इस अनुभवजन्य ज्ञान को न केवल चिकित्सा कार्य से जुड़े व्यक्तियों को अपितु सम्पूर्ण मानव जाति को अवगत करवाने के लिए लेखन का माध्यम चुना।

इस क्रम में डॉ. अशोक सक्सेना द्वारा रचित **"श्वसन संस्थान रोग निर्देशिका"** नामक पुस्तक आयुर्वेद शास्त्र में चिकित्सा साहित्य लेखन की एक नई परम्परा का आरम्भ है। वास्तव

Prof. Dr. Radhey Shyam Sharma
Vice Chancellor
Office: Nagaur Road, Karwar, Jodhpur - 342 037
Phone : 0291-5153701 (O), 291-2542200 (R)
E-mail: vd.rssharma@gmail.com
rau_jodhpur@yahoo.co.in

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
जोधपुर
Dr. Sarvepalli Radhakrishnan
Rajasthan Ayurved University,
Jodhpur

में आयुर्वेद में चिकित्सा साहित्य लेखन में किसी एक संस्थान विशेष के रोगों से सम्बन्धित साहित्य की पुस्तकें कम ही देखने को मिलती हैं। मैं यह मानता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से चिकित्सक वर्ग के मानस में आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से सामान्य रोगों की चिकित्सा के अतिरिक्त किसी संस्थान विशेष के विभिन्न रोगों अथवा किसी एक रोग विशेष की चिकित्सा हेतु उद्यत होने की प्रेरणा मिलेगी। जिससे तत्तत् रोग विशेष की चिकित्सा के विषय में नये नये अनुभूत प्रयोग उपलब्ध होंगे जो ने केवल आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान को और समृद्ध बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे अपितु आयुर्वेद के माध्यम से चिकित्सा कार्य का समाज में एक नये सोपान पर ले जाने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने अनुभवों के माध्यम से श्वसन संस्थान के रोगों का बहुत ही सरल भाषा में वर्णन किया है। श्वसन संस्थान की रचना व क्रिया सहित वहां होने वाले विभिन्न रोगों के निदान, सम्प्राप्ति व चिकित्सा से सम्बन्धित कई अनुभवों को शास्त्र सम्मत ज्ञान से पुष्ट करते हुए उन्होंने सरल भाषा में लिपिबद्ध किया है। आयुर्वेद में उपलब्ध ज्ञान को आज के युग में समाज के लिये और उपयोगी बनाने हेतु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के सन्दर्भ में समझा जाना युगानुरूप सन्दर्भ में उचित है। किन्तु इसकी मर्यादा आधुनिक सन्दर्भों के अनुसार आयुर्वेद ज्ञान को समझने व आधुनिक नैदानिक उपकरणों तक ही रहनी चाहिए और चिकित्सा कार्य में आयुर्वेद वर्णित चिकित्सा सिद्धान्तों व औषध योगों अथवा पथ्यापथ्य का ही उपयोग करना चाहिए। लेखक ने अपने चिकित्सा कार्य में व लेखन कार्य दोनों ही में इस मर्यादा का पूरा ध्यान रखा है।

मुझे आशा है कि यह लेखक द्वारा पूर्ण मनोयोग से लिखित यह पुस्तक आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की समृद्धि एवं चिकित्सक वर्ग व चिकित्सा विज्ञान के प्रशिक्षणार्थियों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी । मैं इस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता हेतु डॉ. सक्सेना को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(प्रो. डॉ. राधेश्याम शर्मा)
कुलपति

प्राक्कथन

श्वसन संस्थान गत रोग या प्राणवह स्रोतोदुष्टि सम्प्रति हमारे समाज में आबालवृद्ध सभी लोगों को पीड़ित कर रही है। आयुर्वेद चिकित्सकों के पास श्वसन संस्थान से संबन्धित रोगी पर्याप्त संख्या में चिकित्सा हेतु आते हैं और अधिकतर चिकित्सक उनकी सफल चिकित्सा भी करते हैं।

मैनें अपने 30 वर्ष के चिकित्सा अनुभव में देखा है कि सामान्यतः चिकित्सकों के द्वारा शास्त्रीय चिकित्सा सूत्रों का अवलम्बन ना करते हुये लम्बे समय तक एक ही प्रकार के योगों से, जो कि परम्परा से चले आ रहे हैं, जैसे श्वासकुठार रस, त्रिभुवनकीर्ति रस, आनन्दभैरव रस, चन्द्रामृता रस, कनकासव आदि से ही चिकित्सा करते हैं, जिससे सफलता की दर उतनी नहीं होती जितनी आवश्यक है।

मैनें अपने चिकित्सा अनुभव में यह भी देखा है कि यदि किसी को श्वास वेग हो रहा है तो हम उस व्याधि को केवल श्वास रोग मान कर ही चिकित्सा करते हैं, जबकि श्वास, श्वसन संस्थान का एक लक्षण मात्र है, व्याधि नहीं। सामान्यतः बिना सापेक्ष निदान किये हुये ही हम औषध प्रयोग करते हैं जिससे रोगी को गंभीर परिणाम भुगतने पडते हैं।

उदाहरणस्वरुप हार्दिक श्वास व तमक श्वास दोनों के कारण एवं उसकी चिकित्सा एकदम विपरीत है। किन्तु सापेक्ष निदान की जानकारी के अभाव में हम हार्दिक श्वास के रोगी को भी तमक श्वास की चिकित्सा दे देते हैं, जिससे कभी–कभी मृत्यु तक हो सकती है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के एक छोटे से उदाहरण से मैं इसे समझाना चाहूँगा। तमक श्वास में एड्रेनर्जिक औषधों से श्वसन संस्थानगत व्याधियों में लाभ होता है। हमारे मल्ल के योग संवेदीनाडी संस्थान को उत्तेजित करते हैं और वे एड्रेनर्जिक होते हैं। इससें तमक श्वास में तो लाभ हा जाता है, किन्तु एड्रेनर्जिक औषधे हार्दिक श्वास में नुकसानदेह होती हैं। इसलिये मल्ल के योगों का हार्दिक श्वास में भूल कर भी प्रयोग नहीं करना चाहिये।

सामान्यतः शोध के दो तरीकों का अवलम्बन किया जाता है। प्रथम–आयुर्वेदिक पद्धति से रोग का निदान करें और आयुर्वेदिक पद्धति से ही चिकित्सा करें। दूसरा–आधुनिक चिकित्सा पद्धति के उपकरणों व संसाधनों का रोग निदानार्थ उपयोग करें एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा करते हुये परिणाम प्राप्त करें।

मैनें इस पुस्तक के लेखन में दूसरे सिद्धान्त का अवलम्बन किया है। अपने 30 वर्ष के चिकित्सा काल में इसी सिद्धान्त को अपनाते हुये श्वसन संस्थान गत रोगों की यथासंभव सफल चिकित्सा की है, जिसके अनुभवों को मैनें यथासंभव दर्शाने का प्रयास किया है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान से निदान करने में सामान्यतः निदान सही–सही होता है। इसीलिये चिकित्सा में भी प्रायः त्रुटि की संभावना न्यूनतम रहती है। हमारे आर्श ग्रन्थों में किसी भी व्याधि का विस्तृत वर्णन नहीं है, इससे रोगों के निदान में कठिनाई होती है।

इस पुस्तक में स्थान स्थान पर क्ष–किरण के चित्र देकर किस रोग में किस प्रकार का चित्र आता है, यह बताने का भी प्रयास किया गया है ताकि हमारे आयुर्वेद चिकित्सक क्ष–किरण देख कर निदान कर सके।

पुस्तक के अन्त में श्वसन संस्थान से सम्बन्धित योगो का वर्णन किया है और यथासंभव यह प्रयास किया गया है कि किस रोग की, किस अवस्था में, किन–किन योगों का उपयोग करना चाहिये, जैसे कनकासव का प्रयोग हार्दिक श्वास में नहीं करना चाहिये। उसके स्थान पर अर्जुनारिष्ट व सारस्वतारिष्ट का प्रयोग उपयोगी सिद्ध होता है।

मेरी जानकारी में श्वसन संस्थान से सम्बन्धित इस प्रकार की पुस्तक संभवतः उपलब्ध नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि शहरी क्षेत्र में कार्य करने वाले चिकित्सकों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने वाले चिकित्सकों के लिये यह पुस्तक समान रुप से उपयोगी सिद्ध होगी।

आभार – सर्वप्रथम मैं आर्ष ऋषियों का आभारी हूँ जिन्होनें आयुर्वेद को लिपीबद्ध कर अपने ज्ञान को जन कल्याण हेतु प्रस्तुत किया। साथ ही इस पुस्तक के लेखन में कई लेखकों व पुस्तकों की सहायता ली गई है, मैं उन सबका ह्रदय से आभारी हूँ।

स॰रा॰ आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के माननीय कुलपति डॉ॰ राधेश्याम जी शर्मा का उनके मार्गदर्शन के लिये मैं ह्रदय से आभारी हूँ। डॉ॰ श्रीकृष्ण खाण्डल, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर, का भी मार्गदर्शन मुझे मिला है, मैं उनका भी ह्रदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत प्रस्तक को लिखने में डॉ॰ रमेश कुमार भूत्या से प्रेरणा, उत्साहवर्धन एवं सहयोग मिला है, उनका भी मैं ह्रदय से आभारी हूँ। वे आयुर्वेद की कई अत्युपयोगी पुस्तकों के लेखक रहे हैं।

मैं डॉ॰ पत्तासिंह सोलंकी, कोटा, डॉ॰ राधेश्याम गर्ग, बारां, डॉ॰ श्रीराम शर्मा, उदयपुर, डॉ॰ आनन्द शर्मा, स॰ निदेशक, अजमेर, बून्दी के डॉ॰ जगदीश शर्मा, डॉ॰ राजेन्द्र सिंह सोलंकी, डॉ॰ रश्मि गर्ग, डॉ॰ श्री ओम शर्मा, स्व॰ डॉ॰ ओमप्रकाश चतुर्वेदी, डॉ॰ दिवाकर शर्मा, डॉ॰ कृष्णानन्द शर्मा, डॉ॰ विजया जैन, डॉ॰ पूजा अग्रवाल, श्री द्वारकालाल व श्री बजरंगलाल, कम्पाउन्डर एवं उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूँ जिनका मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है।

मैं मेरी पत्नी श्रीमति निशा सक्सेना का उनके धैर्य एवं उत्साहवर्धन के लिये अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ।

अन्त में मैं साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया) के भाई सा॰ श्री पवनजी, श्री तनयजी, श्री राजेशजी ओझा को उनके सहयोग के लिये कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिसके कारण ही इस पुस्तक का साकार होना संभव हो पाया।

कोई पुस्तक कभी सम्पूर्ण नहीं होती, गलतियाँ होना स्वाभाविक है, अतः सभी विद्वानों सें गलतियों के लिये क्षमा चाहते हुये, उपयोगी सुझाव व समालोचना सादर आमंत्रित हैं। मैं उनका बहुत आभारी रहूंगा।

अन्त में माँ दुर्गा की प्रार्थना के श्लोक से अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा –

विद्याः समस्ता तव देवी भेदा, स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु।

भावार्थ – हे! माँ दुर्गा, संसार की सारी विद्याऐं आपके ही भेद हैं एवं संसार की सारी स्त्रियाँ आपका ही प्रतिरुप हैं।

डॉ॰ अशोक कुमार सक्सेना
1–आई–28, विकास नगर,
बून्दी (राज॰)
मो॰ 09414986787

अनुक्रमणिका

1. श्वसन संस्थान के रोगों का वर्गीकरण (Classification of Respiratory Diseases) 1
2. श्वसन संस्थान (Respiratory system) 3
3. श्वसन संस्थान के अवयव (Organs of Respiratory Ssytem) 5
4. श्वसन संस्थान का परीक्षण (Examination of the respiratory system) 19
5. श्वसन संस्थान गत रोगों के मुख्य लक्षण (Leading Symptoms of Respitary System) 32
6. नासा रोग एवं चिकित्सा विज्ञान 33
7. प्रतिश्याय (Common cold, Acute coryza, Acute rhinitis) 35
8. जीर्ण प्रतिश्याय या दुष्ट प्रतिश्याय (Chronic rhinitis, Chronic hypertrophic rhinitis) 43
9. वात कफज प्रतिश्याय – पीनस (Atrophic rhinitis, Chronic aropic rhinitis) 45
10. नासा वायुविवर शोथ – नासास्रोत शोथ (Para nasal sinusitis) 49
11. जीर्ण नासा वायु विवर शोथ (Chronic catarrah and suppuratation in the para nasal sinuses) 52
12. नासार्श (Nasal Polipus) 55
13. नासार्बुद (Nasal Tumours) 58

14. नासा रक्त स्राव (Epitaxis) 60

15. नासास्रंस (Deviation of the Nasal Septum) 62

16. नासा पाक एवं नासा शोथ (Dermatitis of the nasal vesitible) 64

17. कण्ठशालूक या गलशालूक (Adenoids) 66

18. गलग्रंथि शोथ (Tonsilitis) 68

19. जीर्ण अवरोध जन्य फुफ्फुस रोग (Chronic obstructive pulmonary disease) 74

20. जीर्ण वायु प्रणाली शोथ अथवा जीर्ण श्वसनिका शोथ (Chronic Bronchitis) 90

21. वातोत्फुल्लता या वायु कोष्ठ विस्तृति (Emphysema) 93

22. श्वास नली शैथिल्य, जीर्णपूय कास, वायुप्रणाली विस्तृति (Bronchiectasis, Ectasis dilation) 99

23. जीर्ण फुफ्फुसीय अक्षमता जन्य व्याधियाँ (Chronic restrective pulmonary disease (CRPD)) 103

24. फुफ्फुसीय तान्तवमयता (Pulmonary fibrosis) 108

25. तीव्र कास (Acute bronchitis) 111

26. युवा सुलभ जीर्ण कास (Pulmonary eosinophia) 114

27. फौफ्फुसीय वाहिनीगत विकार (Pulmonary vascular disease) 117

28. फुफ्फुसीय संक्रमण (Pulmonary Infection) 121

29. फुफ्फुस विद्रधि (Lung abscess, Pulmonary abscess) 137

30. राजयक्ष्मा या क्षय रोग 142
(Pulmonary tuberculosos, Koch's disease, Adult phthisis)

31. फुफ्फुसावरणीय रोग 154
(Pleural Diseases)

32. फुफ्फसावरणीय अर्बुद 157
(Pleural Tumour)

परिशिष्ट–1 श्वसन संस्थान के रोगों में प्रयोज्य योग 158

परिशिष्ट–2 अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश 172
(English – Hindi - Dictionary)

परिशिष्ट–3 हिन्दी–अंग्रेजी–शब्दकोश 184
(Hindi - English – Dictionary)

परिशिष्ट–4 सन्दर्भित ग्रन्थ 196

परिशिष्ट–5 अंग्रेजी अनुक्रमणिका 198
English Index

परिशिष्ट–6 हिन्दी अनुक्रमणिका 200
Hindi Index